125th Birth Anniversary Year of Netaji Subhas Chandra Bose

Subhas Chandra Bose, fondly called Netaji who was born on 23 January 1897, was undoubtedly one of the most prominent Indian nationalist whose defiant patriotism made him a hero in India.

He became President of the Indian National Congress in 1938. However, soon after being re-elected in 1939, he was ousted from Congress leadership positions following differences with the Congress high command. He was subsequently placed under house arrest by the British before bravely escaping from India in 1940.

Netaji arrived in Germany in April 1941, where the leadership offered unexpected cold sympathy for the cause of India's independence. However, he did not divert from his goal which was freedom for India. In November 1941, with German funds, a Free India Centre was set up in Berlin and soon a Free India Radio, on which he would make nightly broadcasts. A 3,000-strong Free India Legion, comprising Indians captured by Erwin Rommel's Afrika Korps, was also formed to aid in a possible future German invasion of India. Later that same year, with German help, he was transferred to a Japanese submarine from which he disembarked in Japanese-held Sumatra in May 1943.

With Japanese support, Netaji revamped the Indian National Army (INA). Before long the Provisional Government of Free India, presided by Netaji, was formed in the Japanese-occupied Andaman and Nicobar Islands. Netaji had great drive and charisma. The INA under Netaji was a model of unity in diversity comprising a splendid mix of ethnicity, religion, and even gender from all regions of India.

The Japanese also took possession of Andaman and Nicobar Islands in 1942 and a year later, the islands were renamed Shaheed (Martyr) and Swaraj (Independence). During Netaji's only visit to the islands in early 1944, India hoisted its own tri-colour flag for the first time. On the Indian mainland, an Indian Tricolour, modelled after that of the Indian National Congress, was raised for the first time in the town of Moirang, in Manipur, in north-eastern India. On 6 July 1944, in a speech broadcast by the Azad Hind Radio from Singapore, Netaji addressed Mahatma Gandhi as the "Father of the Nation" and asked for his blessings and good wishes for the war he was fighting. This was the first time that Gandhiji was referred to by this honorific title.

Netaji believed in the Bhagavad Gita as a great source of inspiration for the struggle against the British. Swami Vivekananda's teachings on universalism, his nationalist thoughts and his emphasis on social service and reform had all inspired Netaji from his very young days. He believed that socialism in India owed its origins to Swami Vivekananda. He had clearly expressed his belief that democracy was the best option for India. The most famous quote of Netaji was "Give me blood and I will give you freedom". Another famous quote was "Dilli Chalo" ("On to Delhi") This was the call he used to give the INA armies to motivate them. "Jai Hind" or "Glory to India" was another slogan used by him and later adopted by the Government of India and the Indian Armed Forces. Netaji was considered a patriot even by some of his rivals in the Congress. Gandhi himself wrote that Bose's "... patriotism is second to none", and he was moved to proclaim after Netaji's death that he was a "prince among patriots"— a reference, in particular, to his achievement in integrating women and men from all the regions and religions of India in the Indian National Army. Netaji wanted freedom for India at the earliest opportunity.

The Government of India will commemorate the 125th Birth Anniversary of Netaji on 23 January 2022. Department of Posts is pleased to issue a commemorative postage stamp on 125th Birth Anniversary Year of Netaji Subhas Chandra Bose to begin the year long celebrations.

Credits:

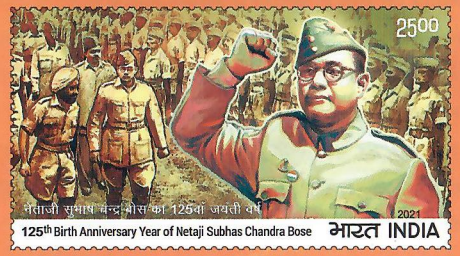
Stamps, FDC and Brochure	:	Sh. Kamleshwar Singh
Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma
Text	:	Sh. Pallab Bose

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का 125वां जयंती वर्ष



125th Birth Anniversary Year of Netaji Subhas Chandra Bose

विवरणिका BROCHURE

सुभाष चन्द्र बोस का 125वां जयंती वर्ष

सुभाष चन्द्र बोस जिनका जन्म 23 जनवरी, 1897 को हुआ था, को प्रेमपूर्वक नेताजी के नाम से भी जाना जाता है। वे निःसन्देह भारत के सर्वप्रमुख राष्ट्रवादी नेता थे, जिनकी प्रबल देशभक्ति ने उन्हें भारत का महानायक बना दिया।

नेताजी 1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने। 1939 में इस पद के लिए पुनः चुने जाने के तुरंत बाद, कांग्रेस हाई कमान से हुए मतभेद के कारण उन्हें कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व पदों से हटा दिया गया। इसके बाद ब्रिटिश हुकूमत द्वारा उन्हें नजरबंद कर दिया गया और 1940 में अत्यंत बहादुरी दिखाते हुए वे भारत से निकल भागने में कामयाब रहे।

अप्रैल, 1941 में नेताजी जर्मनी पहुंचे। वहां के नेताओं ने भारत की स्वतंत्रता के प्रति कोई गर्मजोशी या हमदर्दी नहीं दिखाई। परंतु उन्होंने भारत को आजादी दिलाने के अपने परम लक्ष्य से नजर नहीं हटाई। जर्मनी में जुटाए धन से नवंबर, 1941 में बर्लिन में एक फ्री इंडिया सेंटर (स्वतंत्र भारत केंद्र) की स्थापना की गई और इसके कुछ अर्से बाद ही फ्री इंडिया रेडियो की शुरूआत हुई, जिस पर वे रात्रि के समय संदेश प्रसारित करते थे। भविष्य में जर्मनी द्वारा भारत पर हमला बोलने के उद्देश्य से फ्री इंडिया लीजन नामक एक बल भी तैयार किया गया। इस बल में एरविन रॉमेल कोर द्वारा बंदी बनाए गए 3000 से अधिक भारतीय शामिल थे। इसी वर्ष जर्मनी की मदद से नेताजी को एक जापानी पनडुब्बी तक पहुंचाया गया, जिससे वे मई, 1943 में जापानी कब्जे वाले सुमात्रा पहुंचे।

जापान की मदद से नेताजी ने आजाद हिन्द फौज का पुनर्गठन किया। इसके कुछ समय बाद ही उनके नेतृत्व में जापान के कब्जे वाले अंडमान निकोबार द्वीपसमूह ने आजाद भारत की अंतरिम सरकार का गठन किया। नेताजी का करिश्माई व्यक्तित्व उत्साह से भरा था। नेताजी के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज विविधता में एकता की आदर्श मिसाल थी, जिसमें भारत के समस्त क्षेत्रों के विभिन्न वर्ग समुदायों, धर्मों तथा यहां तक कि महिलाओं की भी मिली-जुली भागीदारी थी।

जापानियों ने 1942 में अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह पर कब्जा कर लिया और इसके एक वर्ष बाद इन द्वीपों को शहीद और स्वराज का नाम दिया गया। नेताजी ने 1944 की शुरुआत में इन द्वीपों का दौरा किया और इसी दौरान यहां पहली बार भारत का अपना तिरंगा फहराया गया। भारत की सरजमीं पर तिरंगा, जोकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के झंडे के आधार पर तैयार किया गया था, पहली बार मणिपुर के मोरांग में फहराया गया। 6 जुलाई, 1944 को आजाद हिन्द फौज रेडियो पर सिंगापुर से प्रसारित अपने भाषण में नेताजी ने महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कह कर संबोधित किया था और जिस युद्ध का नेतृत्व नेताजी कर रहे थे, उसके लिए गांधीजी का आशीर्वाद भी मांगा। यह पहला अवसर था जब गांधीजी को राष्ट्रपिता कह कर पुकारा गया था।

ब्रिटिश हुकूमत से जंग में भगवत गीता नेताजी के लिए प्रेरणा का स्रोत थी। सार्वभौमवाद अपनाने के स्वामी विवेकानंद के संदेशों तथा उनके राष्ट्रवादी चिंतन तथा समाज सेवा एवं सुधार पर बल देने के उनके संदेश ने नेताजी को किशोरावस्था से ही काफी प्रेरित किया था। उनका मानना था कि भारत में समाजवाद का सूत्रपात स्वामी विवेकानंद ने ही किया था। नेताजी ने अपनी यह राय प्रबल रूप से रखी थी कि लोकतंत्र ही भारत के लिए सर्वश्रेष्ठ विकल्प है। उनका सबसे लोकप्रिय नारा था – "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।" एक अन्य नारा जो बहुत प्रसिद्ध हुआ, वह था – "दिल्ली चलो"। इसी नारे की बदौलत उन्होंने आजाद हिन्द फौज को जोश और उत्साह से भर दिया। "जय हिन्द" का नारा भी नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने ही दिया था, जिसे आगे चल कर भारत सरकार और सशस्त्र बलों ने अपनाया। कांग्रेस में उनके प्रबल विरोधी भी नेताजी को देशभक्त मानते थे। स्वयं गांधीजी ने लिखा "सुभाष चन्द्र बोस की देशभक्ति बेमिसाल है।" नेताजी के निधन पर गांधीजी ने कहा कि "वे समस्त देशभक्त कौम के यशस्वी सिरमौर थे।" ऐसा कहते हुए गांधीजी का तात्पर्य आजाद हिन्द फौज में भारत के समस्त क्षेत्रों तथा धर्मों के महिला तथा पुरुष सेनानियों को एकजुट करने से था। नेताजी का उद्देश्य था कि भारत को शीघ्रातिशीघ्र गुलामी की बेड़ियों से मुक्त करवाया जाए।

भारत सरकार 23 जनवरी, 2022 को नेताजी की 125वीं जयंती का समारोह आयोजित करेगी। डाक विभाग, नेताजी पर वर्षभर चलने वाले कार्यक्रमों के शुभारंभ के तौर पर, 'नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का 125वां जयंती वर्ष' विषय पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:

डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण, और विवरणिका	:	श्री कमलेश्वर सिंह
विरूपण कैशे	:	श्रीमती अलका शर्मा
पाठ	:	श्री पल्लव बोस

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

विवरणिका BROCHURE

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का 125वां जयंती वर्ष

125th Birth Anniversary Year of Netaji Subhas Chandra Bose

तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: 2500 पैसा : 2500 p	मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: वेट ऑफसेट : Wet Offset
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	: 504000 : 504000	मुद्रक Printer	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद : Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य: ₹5.00